सं० ओ॰ वि०/एफ.०डी०/114-86/36513.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० ओमेगा आईट स्टील प्रा० लि॰, सैक्टर 24, फरीदावाद, के श्रीमक श्री दया राम, पुत्र श्री विरजी, गांव सिलाटी डा॰ असावटी, जिला फरीदाबाद, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1953, द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम इयायालय, करीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सन्वन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु िर्दिष्ट करो हैं वो कि उक्त ग्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या थी दया राम की तेवाशों का तमापन न्यापोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० थ्रो०वि०/एफ०डी०/167-86/36520.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० शिव शक्ति ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन, पटेल भवन, अजरोत्था, फरीदावाद, केश्विमिकश्री राम चन्द्र राव, पुत्र श्री चोख राम राव मार्फत श्री खार० एन० शर्मा, 1-के/16, एन० आई० टी०, परीदावाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिन्ण्य हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की भारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पड़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

भया श्री राम चन्द्र राव की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्ह्योविव /एफ बीं । 152-86/36534. -- चूं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं अमरपाली स्ट्वचरल प्रा० लिंव मथुरा रोड़, फरीदावाद, के श्रमिक श्री राम कैलाण राय, पुत्र श्री विण्न देव राय, गांव व डाकखाना पानापुर लंग जिला वैणाली (वहार), तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-अन/68/15254, दिनांक 20 जून 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-अन/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1953 द्वारा उक्त धिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उत्तते सुमंगत या उनते सम्बन्धित नीचलिखा गामला न्यायिनण्य एवं पंचाटतीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त अवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादशस्त गामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

वया श्री राम कैलाण राय की सेवाग्रों का समापन ध्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 7 श्रवतूबर, 1986

संव ग्रोविविविविक्त प्राव्यान । 26-85/36887.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि परिवहन ग्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, 2. जनरल मनेजर हरियाणा रोड़वेज गुड़गांव, के श्रीमक श्री गुलाव सिंह, पुत्र श्री ग्रीमकार, गांव गोलिका हाकखाना पुनीसिका, तहसील रिवाड़ी, जिला महेन्द्रगढ़ तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके वाद लिखित मामलें में कोई ग्रीबोगिक विवाद है।

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं --

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री गुलाव सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰ वि०/एफ०डी०/116-86/36895.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० जी० एम० इन्जि० एन० ग्राई० टी॰ फरीदावाद, के श्रमिक श्री रामनवल मार्फत मजदूर संघ विश्वकर्मा निलम बाटा रोड़, फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रौद्योगिक विवाद है।

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये, यब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रधिनियम 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिस्चना सं० 5415—3—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिस्चना सं० 11495—जी—श्रम 57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिस्चना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है।

क्या श्री रामनवल भी सेवाग्रों का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि वि प्रि वि । 16-86/36902. — चुंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं जी एम इन्जि एन श्राई ०टी० परीदाबाद, के श्रिमिक श्री मुभाषचन्द मार्फत भारतीय मजदूर संघ विश्व कर्मा भवन निलमबाटा रोड़ फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है :

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य एवं पंचाटतीन मास में देने हेतु निर्दिण्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सुभाष चन्द की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो०वि०/एफ०डी०/116-86/36909.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० जी० एम० इन्जि० एन० ग्राई० टी० फरीदाबाद, के श्रमिक श्री प्रवीण सिंह, मार्फत भारतीय मजदूर संघ विश्वकर्मा भवन निल्मवाटा रोड़ फरीदाबाद, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद भिधितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिधिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 26 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुये भिधिसूचना सं 0 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधसूचना की धारा 7 के भधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा भामला न्यायिनणंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दंश्ट करते हैं, जीकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

न्या थी प्रवीण सिंह की सेवाग्रों की समापन न्यायोचित तया ठीक ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?